UNIVERSITY GRANTS COMMISSION

WESTERN REGIONAL OFFICE

GANESHKHIND, PUNE-411007

MRP (Executive Summary)

NAME AND ADDRESS OF THE PRINCIPAL INVESTIGATOR :- DR.PARDESHI PRAMOD BABANSING, ARTS & COMMERCE COLLEGE MADHA, SOALPUR

F.No231142/14(WRO) dated-20Feb2015 ,

F.No.231142/14genral/202(WRO)XII Plan Dated-22 march 2017

TITLE OF THE PROJECT:- 'डॉ. सुरेशचन्द्र शुक्ल के नाटकों में चित्रित परिवर्तित जीवन मूल्य'

मूल्य मानव निर्मित एक ऐसी समाज सापेक्ष अवधारणा है, जो मानव जीवन को नियामक बनाती है। मानव जीवन के कल्याण हेतु तथा मानव जीवन को समुन्नत बनाने हेतु विव्दानों ने कुछ मापदण्डों का निर्धारण किया और उन्हीं के आधार पर मूल्य की अवधारणा अस्तित्व में आयी। उसमें मानव जीवन का हित समाविष्ठ होता है। ये जीवन के नियामक, आदर्श एवं सर्व सम्मत सिध्दांत होते है, जिसे अपनाकर जीवन का सुन्दर बनाया जा सकता है। उन्नीसवी शताब्दी के उत्तरार्ध से अर्थ विस्तार के बाद मूल्य शब्द को मानव या जीवन से जोडा गया, इसके विभिन्न पक्षों की चर्चा होने लगी। मानव में ही मूल्य निहित होने के कारण मानव मूल्य और जीवन मूल्य दोनों को एक ही अर्थ का द्योतक मान लिया गया। इसलिए मानवी जीवन को मूल्यवान बनाने की क्षमता रखनेवाले गुणों, मापदण्डों को जीवन मूल्य कहा जाता है। अर्थात मूल्य का निर्माण मानव के साथ–साथ हुआ है। मानव ही मूल्यों का निर्माता और संवाहक है। नये परिवेश में पुरानी मान्यताएँ अपना अस्तित्व खेती है और नयी मान्यताएँ जन्म लेती है, वे ही मूल्य बन जाती है। उन्हीं को आदर्श मानकर मानवी व्यवहार होते है। मूल्य सामाजिक मान्यताओं के साथ परिवर्तित होते रहते है।

जीवन मूल्यों के बारे में चाक्रिक प्रक्रिया दिखाई देती है। पहले मूल्यों का निर्माण होता है,बाद में समाज में धीरे–धीरे परिवर्तन होने लगता है। समाज परिवर्तन के साथ मूल्यों में भी परिवर्तन की प्रकिया शरू हो जाती है। कुछ मूल्यों में संक्रमण होता है। संक्रमण अवस्था में नव मूल्य निर्माण की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। पुराने मूल्यों के स्थान पर नव मूल्यों की स्थापना होने लगती है। कुछ मूल्यों का विघटन–हास हो होता है। वास्तव में मूल्य परिवर्तन वह परिवर्तन है जिसमें कोई केंद्रिय सार्थकता हो, ऐसी सार्थकता जो जीवन संचेतना मानसिक संरचना या विचारसरणी को प्रभावित करती हो । नये युग में नये मूल्यों का निर्माण आवश्यक होता है। हर

एक समाज अपनी आवश्यकता के अनुसार मूल्यों का निर्माण करता है। वर्तमान काल में सभी क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन हो रहा है। पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति का अनुकरण,औद्योगिक क्रांति, भूमंडलीकरण एवं बाजारवाद और पूंजीवादी अर्थव्यवस्था ने मानव जीवन को बदल दिया है। पुराने मूल्यों को तोडकर नए मूल्य स्थापित होने लगे है।

समाज की लघुत्तम इकाई परिवार है। पारिवारिक मूल्यों के अंतर्गत ममता, प्रेम, स्नेह, वात्सल्य, सहानुभूति, उदारता, बंधुता, साहचर्य, आत्मियता, सौहार्द्र, त्याग, समर्पण, सेवा आदि मूल्य आते हैं। इन्हीं मूल्यों की नींव पर पारिवारिक मूल्यों की डोर मजबूती से बंधी रहती है। लेकिन वर्तमान समाज की पारिवारिक स्थिति में कई परिवर्तन आए हैं। औद्योगिकीकरण, पाश्चात्य प्रणाली का प्रभाव, विलासी भोगवादी दृष्टि, स्वार्थांधता आदि के कारण प्राचीनकाल से चली आ रही संयुक्त परिवार के परंपरा की श्रृखंला बिखर गयी है। पुरानी और नयी पीढ़ी में वैचारिक संघर्ष बढ़ने लगा। परिवार में सदस्यों के बीच स्वतंत्र, वैयक्तिकता और हितप्रधान संबंधों की अधिकता बढने लगी। वर्तमान समय में सामाजिक एवं व्यक्तिगत धारणाओं और नीतिमूल्यों में परिवर्तन आने के कारण संयुक्त परिवार विघटित हो गये और एकल परिवार का निर्माण हुआ। एकल परिवारों में पारिवारिक संस्कारों के अभावों के कारण परिवार बिखर रहे हैं। एकल परिवारों में व्यक्ति संघर्ष,अर्थ केंद्रितता, स्वार्थी वृत्ति, व्यक्ति स्वातंत्र्य, संकुचितता, अहं की टकराहट आदि परिवर्तित मूल्यों के कारण परिवारों का विघटन हो रहा है। परिणामस्वरूप इनमें असफल दाम्पत्य जीवन ने प्रवेश किया है। अर्थाभाव, पिछड़ापन, गरीबी, जीवनशैली आदि कारणों से पारिवारिक संबंधों में परिवर्तन आकर पारिवारिक संबंध सिमट रहें हैं। पारिवारिक संबंधो में प्रेम के बजाय तणाव पैदा हो गया है। राजनीतिक मूल्यों भी अनेक कारणों से परिवर्तन हुआ है।

डॉ. सुरेश शुक्ल चन्द्र जी का स्थान अपने समकालीन नाटककारों में उल्लेखनीय माना जाता है। उन्होनें पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक, पौराणिक आदि विषयों को लेकर नाट्य सृजन किया है। उनकी नाट्य अनुभूतियाँ उच्च जीवन मूल्यों और सामाईक संदर्भों पर आधारित है। डॉ. चन्द्र ने अपने परिवेश और अनुभूतियों से विकसित इन नाटकों के कथानकों में इतिहास के पन्नों में दबे शाश्वत सत्य, जीवन की विसंगतियाँ, सामाजिक अव्यवस्था, टूटते मानवीय मूल्य, दूषित राजनीति, सांस्कृतिक संक्रमण आदि विषयों को व्यक्त किया गया है।

PRINCIPAL INVESTIGATOR

Arts & Commerce College Madha

Principal,
Arts & Commerce College
Madha, Dist. Solapur